5 मार्च 2023
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

जय गणगौर

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

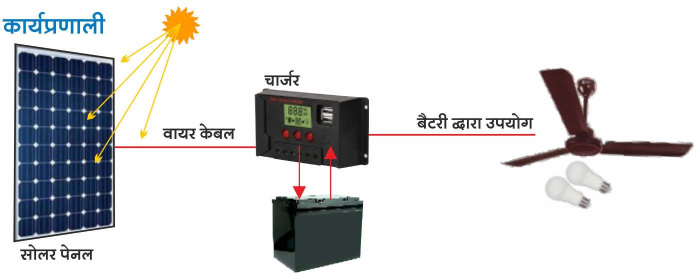

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 मार्च 2023 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 09
•••
चैत्र/कृष्ण
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारत वर्ष का सर्वमान्य संवत विक्रम संवत है। इसका शुभारम्भ-शुक्ल प्रतिपदा से होता है। ब्रह्म पुराण के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि का प्रारम्भ हुआ था और इसी दिन से भारत-वर्ष में कालगणना प्रारंभ हुई थी। इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत वर्ष इस सृष्टि प्रथम राष्ट्र है। सबसे प्राचीन राष्ट्र होने का गौरव भारत-वर्ष को ही प्राप्त है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बसन्त ऋतु में आती है। बसंत ऋतु में वृक्ष लता फूलों से लदकर आनन्दित करते हैं इसे हम मधुमास भी कहते हैं। बसन्त ऋतु पूरी धरती को विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों से सजाकर जन मानस को नव वर्ष के उल्लास और उमंग से भर देती है।

महाराज विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर एक नये युग का शुभारंभ किया, इसे विक्रमी शक संवत्सर कहा जाता है। राजा विक्रमादित्य की वीरता और युद्ध कौशल पर अनेक प्रशस्तिपत्र तथा शिलालेख लिखे गये जिनमें शकों पर भीषण आक्रमण कर विजय प्राप्त करने की गाथाएं लिखी हैं। इतना ही नहीं शकों को उनके गढ़ अरब में भी करारी मात दी और अरब विजय के उपलक्ष्य में मक्का में महाकाल भगवान शिव का मन्दिर बनवाया।

हिन्दू संस्कृति के अनुसार नव संवत्सर पर कलश स्थापना कर नौ दिन का व्रत रखकर, माँ दुर्गा की पूजा प्रारंभ कर नवमी के दिन हवन-पूजन कर भगवती से सुख-शांति तथा कल्याण की प्रार्थना की जाती है। इस तरह, भारतीय संस्कृति और जीवन का विक्रम संवत्सर से गहरा संबन्ध है। सिन्ध प्रान्त में नव संवत्सर चेटी चंड के रूप में मनाया जाता है। वर्ष प्रतिपदा को ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य संघ-चालक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिवस भी आता है, उसी दिन स्वामी दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई थी। द्वापर युग में इसी दिन धर्मराज युधिष्ठिर का राज-तिलक हुआ था। इस प्रकार वर्ष प्रतिपदा का भारत-वर्ष में अत्यन्त महत्व है।

इसी माह मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव राम नवमी के दिन मनाया जाता है। साथ ही हनुमान जयन्ति का पावन पर्व भी आता है। नववर्ष की मंगल शुभकामनाओं के साथ,

ब्रह्मा ने सृष्टि रचना की, घड़ी सनातन आई है।
विक्रम संवत की आप सभी को, बांरबार बधाई है।।

गणगौर

डॉ. श्रीमती अनुराधा शर्मा

वासन्ती बयार विदा होते ही होली का खुमार भी अपना रंग छोड़ देता है, दिन गर्म होना शुरू हो जाते हैं। फूलों की बहार में चम्पा, मोगरा खिलने को व्याकुल होते हैं, जूही, रात की रानी अपनी खुशबू बिखेरने को बेताब होती हैं । वहीं नीम के पेड़ पर भी नई नई कोपलें आने लगती हैं, वातावरण में महुआ की खुशबू तैर जाती है। ऐसे मादक मौसम में **गणगौर माता** का उत्सव आता है। होठों पर गणगौर के गीत अपने आप ही आ जाते हैं, तन-मन थिरकने लगते हैं। चैत्र नवरात्रि में गणगौर लोक-पर्व के चलते माता की आगवानी को लेकर लोग 8 दिन पूर्व में ही घरों की साफ-सफाई, घर के सारे कपड़े, बिस्तर धोकर सुखा लेते हैं एवं होलिका दहन के बाद ब्राह्मण, गांव पटेल के घर या मन्दिर में एक निश्चित स्थान होता है जहां विधि-विधान से बांस की बनी टोकरियों में गेंहू के जवारे बोए जाते हैं जिसे किंवदन्तियों के अनुसार रणुबाई (माता गौरी) का प्रतीक माना जाता है।

यह माना जाता है कि माता गवरजा होली के दूसरे दिन अपने पीहर आती हैं तथा आठ दिनों के बाद ईसर (भगवान शिव) उन्हें वापस लेने के लिए आते हैं, चैत्र शुक्ल तृतीया को उनकी विदाई होती है। गणगौर की पूजा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि से आरम्भ की जाती है। सोलह दिन तक सुबह जल्दी उठ कर कन्याएं बाड़ी बगीचे में जाती है दूब व फूल लेकर घर आती हैं। टोकरी में गणगौर की जो पिंडी है उसे चौक मांडकर उसके ऊपर रखा जाता है उस दूब से दूध के छींटे, मिट्टी की बनी हुई गणगौर माता को देती हैं । फूल-पत्ती से पूजा करके कंकू, काजल, टीकी लगाई जाती है। थाली में दही, पानी, सुपारी आदि सामग्री से गणगौर माता की पूजा की जाती है ।

आठवें दिन ईशर जी पत्नी (गणगौर) के साथ अपनी ससुराल पधारते हैं । उस दिन सभी लड़कियां कुम्हार के यहाँ जाती हैं और वहां से मिट्टी की झाँवली (बरतन) और गणगौर की मूर्ति बनाने के लिए मिट्टी लेकर आती हैं । उस मिट्टी से ईशर जी, गणगौर माता, मालन आदि की छोटी-छोटी मूर्तियां बनाती हैं। माता की मूठ ग्यारस से रखी जाती है। इस दिन लड़कियां सुबह होली की राख को आठ पिंडली गोबर में मिलाकर एक छोटी टोकरी में दूर्वा के साथ बिछाके रखी जाती है। लड़कियां सुबह-सुबह बगीचे में जाकर दूब, फूल, पत्ती और लोटे में पानी भरकर गीत गाती हुई इन्हें लाती हैं। इसके

साथ ही इकासना का उपवास रखकर शाम के समय बगीचे में जाकर झाला देती हैं। वहीं दो दिन पहले लोग विशेष रूप से रथ तैयार करते हैं जो बांस की चिपलियों से निर्मित होता है और माता की बाड़ी में नव-विवाहित जोड़ों से लेकर बच्चे, बड़े सब गणगौर माता की पूंजा अर्चना करते हैं। माता की बाड़ी में गणगौर माता के प्रतीक के रूप में ज्वारे बो कर गौरी यानि पार्वती का पूजन-अर्चन किया जाता है। पूजा करते हुए दूब से पानी के छींटे देते हुए गोर-गोर गोमती गीत गाती हैं।

तीज के दिन जवारे रूपी माता के प्रतीक को उस रथ में रखकर साथ में धनियर राजा का रथ बनाकर जोड़े से गाजे-बाजे के साथ घर लाया जाता है, इस दौरान रास्ते भर नव विवाहित जोड़े रथ एवं रथ को सर पर रखने वाली महिलाओं के चरण आस्था के साथ धोते हैं और घर पर लाने के बाद जोड़े द्वारा पहले विधि-विधान से रणु बाई को भोग लगाते हैं और साथ में धनियर राजा यानि भगवान शंकर का पूजन करते हैं। उसके बाद ही घर के सभी लोग पूजा-अर्चना करते हैं। तीज के दिन गणगौर माता और इसरजी का रथ सिंगारा जाता है और बाने निकाले जाते हैं। तीन दिनों तक रथ को घर में रखने के बाद जवारे विसर्जन किए जाते हैं। यहां एक निश्चित स्थान पर शहर या गांव के लोग इकठ्ठा होकर जवारे को गले लगाकर विदाई देते हैं। कुछ मन्नत वाले या समाज के लोग रथ बोड़ाते हैं जिसे रथ रोकना कहते हैं वह अपने घर या मंदिर में रथ को रोककर प्रसादी का आयोजन करते हैं। अगले दिन फिर विदाई होती है।

गणगौर मध्यप्रदेश के निमाड़ एवं सीमावर्ती राजस्थान का एक त्यौहार है, जो चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की तीज को आता है। इस दिन कुवांरी लड़कियां एवं विवाहित महिलायें शिवजी (इसर जी) और पार्वती जी (गौरी) की पूजा करती हैं। गणगौर निमाड़ में आस्था, प्रेम और पारिवारिक सौहार्द का सबसे बड़ा उत्सव है। गण (शिव) तथा गौर (पार्वती) के इस पर्व में कुँवारी लड़कियां मनपसंद वर पाने की कामना करती हैं। विवाहित महिलायें चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर पूजन तथा व्रत कर अपने पति की दीर्घायु की कामना अखंड सौभाग्य, अपने पीहर और ससुराल की समृद्धि तथा गणगौर से हर वर्ष फिर से आने का आग्रह करती हैं। निमाड़ में गणगौर पूजन एक आवश्यक वैवाहिक रस्म के रूप में भी प्रचलित है। नवरात्रों के तीसरे दिन यानी कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तीज को गणगौर माता याने कि माँ पार्वती की पूजा की जाती है। पार्वती के अवतार के रूप में गणगौर माता व भगवान शंकर के अवतार के रूप में ईशर जी की पूजा की जाती हैं। जहां पूजा की जाती है उस स्थान को गणगौर का पीहर व जहाँ विसर्जित की जाती है वह स्थान ससुराल माना जाता है।

गणगौर माता की पूरे निमाड़ में पूजा की जाती है। चैत्र मास की तीज सुदी को गणगौर माता को चूरमे का भोग लगाया जाता है। दोपहर बाद गणगौर माता को ससुराल विदा किया जाता है यानी कि विसर्जित किया जाता है। विसर्जन का स्थान गाँव का कुआं, जोहड़, तालाब होता है। लड़की-लकड़ी के बाजूट पर जवारे रख उनका विसर्जन करती है। गणगौर माता का पूरे निमाड़ में जगह जगह बाना निकाला जाता है, जिस में ईशर और गणगौर माता की आदम-कद मूर्तियां होती हैं। नदी या सरोवर की पाल पर रथ को रखकर उसमें आम के पत्तों से पानी छिंटकर पूजा की जाती है। घी और शक्कर की धूप दी जाती है और इन्हें मंदिर में रखा जाता है। जिन लोगों की मन्नत या मनौती रहती है वो अंतिम दिन इन रथों को अपने घर ले जाते हैं। इन्हें रथ बोड़ाना कहते हैं और उतने ही रथों के गिनती के अनुसार जोड़े जिमाकर उन्हें दक्षिणा दी जाती है। आखिरी दिन रथों को नदी या तालाब के किनारे ले जाकर उनकी पूजा करते हैं और अखण्ड सौभाग्य की कामना के साथ रथ में रखे गए ज्वारों को विसर्जित किया जाता है और रथों को पुनः अपने घरों में लाकर अगले साल के लिएं सुरक्षित रख दिया जाता है। कुछ स्त्री जो शादीशुदा होती है वो अगर इस व्रत की पालना करने से निवर्ती होना चाहती है वो इसका उद्यापन करती है। जिसमें सोलह सुहागन स्त्री को समस्त सोलह श्रृंगार की वस्तुएं देकर भोजन करवाती है।

चैत्र बदी 10 से चैत्र सुदी 3 तक के 9 दिनों के गणगौर उत्सव के दौरान पूरा निमाड़ गीतमय हो जाता है। शिव -पार्वती, ब्रह्मा -सावित्री, विष्णु -लक्ष्मी तथा चंद्रमा -रोहिणी की वंदना के गीत गाये जाते हैं। इनमें सबसे अधिक गीत रनुदेवी (रणुबाई) और उनके पति (धनियेर) सूर्य के संवाद रूप में कहे गये हैं। रणुबाई ही निमाड़ी लोकगीतों की अधिष्ठात्री देवी है। इसके एक गीत में सौराष्ट्र देश से आने का संकेत रनुदेवी की पहचान के लिए महत्वपूर्ण है। एक गीत में रनु बाई को रानी कहा गया है अन्यत्र रणुबाई के मंदिर का वर्णन है जिसमें रणुबाई बिराजती हैं और अपने भक्तों के लिए द्वार खोल देती हैं।

रणुबाई सूर्य की पत्नी राज्ञी का ही अपभ्रंश भाषा और लोकभाषा में घिसा हुआ रूप है। जैसे यज्ञ से जग्न-जन्न और उससे 'जन' बनता है जैसा कि यज्ञोपवीत शब्द से निकले हुए जनेऊ शब्द में पाया जाता है उसी प्रकार रण्नी -रानी और अंत में **रनु** रूप बना। वस्तुतः राज्ञी देवी कि पूजा गुजरात -सौराष्ट्र में प्रचलित थी उसकी 14वीं शताब्दी तक कि मूर्तियां पाई गई हैं।

इतनी संवेदनहीनता कैसे?

अमन व्यास

1. खंडवा के खालवा के एक गांव में दो परिवारों में वर्षों पुरानी अनबन थी। इसी कारण अपने घर के सामने से गुजरते एक परिवार के व्यक्ति को, दूसरे परिवार के सदस्यों ने खूब पीटा। परिवार की महिलाएं, अपने पुरुषों को रोक रहीं थी कि यह मर जाएगा, लेकिन ताव में आए इन लोगो ने उसे इतना मारा कि वह अधमरा हो गया। बात गांव में फैल गई। सैकड़ों ग्रामीण एकत्र हो गए।

पीटने वालों को होश आया तो लगा कि यह व्यक्ति तो मर जाएगा, उन्होंने एंबुलेंस को फोन लगाया। एंबुलेंस आई, लेकिन स्वयं को पीड़ित का हितैषी बताने वाले कुछ लोगों ने कहा कि जब तक जिलाधीश इत्यादि अधिकारी नहीं आयेंगे, हम इसे चिकित्सालय नहीं ले जायेंगे।

एंबुलेंस का पायलट अनुरोध करता रहा, लेकिन इन स्वघोषित हितैषियों ने उसकी बात नहीं मानी, जब मानी तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

एंबुलेंस के थोड़े ही दूर जाने पर वह अभागा **पीटने वालों** और **स्वघोषित हितैषियों** के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ।

2. विमुक्ता शर्मा। इंदौर के एक निजी महाविद्यालय की प्राचार्य। फरवरी के तीसरे सप्ताह में उनके महाविद्यालय के पूर्व छात्र ने जब वे गाड़ी से जा रही थीं, तब पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया। बुरी तरह झुलस चुकी प्राचार्या को चिकित्सालय ले जाया गया, जहां उन्होंने पांच दिन तक अथाह कष्ट सहते हुए, प्राण त्याग दिए।

ऐसी ही घटना पिछले दिनों शाजापुर जिले के एक गांव में हुई, जहां लोग पीड़ित का तड़पते हुए वीडियो बनाते रहे, लेकिन उसे चिकित्सालय नहीं पहुंचाया।

यह संवेदनहीनता कहां से आ रही है? इसे दूर कैसे किया जाए? आत्माभिमान का स्तर इतना अधिक क्यों हो रहा कि किसी से गाड़ी टकरा जाने पर चाकू निकल जाते हैं और भारत जैसे देश में लोग किसी को तड़पते हुए देख रहे हैं, उसकी सेवा नहीं कर रहे।

इस संवेदनहीनता को दूर करना होगा, यह सरकारों से नहीं होगा, परिवारों से होगा।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

भगवान झूलेलाल

भगवान झूलेलाल जयंती सिंधी समाज में बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाई जाती है। हिंदू पञ्चाङ्ग के अनुसार झूलेलाल जयंती चैत्र मास की द्वितीया तिथि को मनाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि झूलेलाल जी भगवान वरुणदेव के अवतार हैं। भगवान झूलेलाल की जयंती को सिंधी समाज चेटीचंड के रूप में मनाता है, जिसे सिंधी नववर्ष के रूप में भी मनाया जाता है। चेटी-चंड हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र नवरात्र के दूसरे दिन अर्थात् चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। सिंधी समाज में मान्यता है कि जल से ही सभी सुखों और मंगलकामना की प्राप्ति होती है इसलिए इसका विशेष महत्व है। चेटी चंड सिंधियों का प्रमुख त्यौहार है और सिंधी नववर्ष भी है। हिन्दू नववर्ष का पहला माह **चैत्र** होता है और सिंधी में इसे **चेट** भी कहते हैं। इसी वजह से इस उत्सव को **चेटी-चंड** कहते हैं। इसी दिन सिंधियों के इष्ट देव उदेरोलाल झूलेलाल की जयंती होती है। इसी कारण से सिंधियों में यह पर्व अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

झूलेलाल जी की जीवनी- सिंध में मोहम्मद बिन कासिम ने अंतिम हिन्दू राजा दाहिर को विश्वासघात कर हरा दिया जिसके बाद सिंध को अल-हिलाज के खलीफा द्वारा अपने राज्य में शामिल कर लिया गया। इसके बाद खलीफा के प्रतिनिधियों द्वारा सिंध में शासन-प्रशासन चलाया गया। इस्लामिक आक्रमणकारियों ने पूरे क्षेत्र में तलवार की नोंक पर लगातार धर्मातरण किया और इस्लाम को फैलाया। इसके बाद, 10वीं शताब्दी में सिंध स्योमरा राजवंश के शासन में आया। सिंध क्षेत्र में इस्लाम में मतांतरित होने वाले स्थानीय लोगों में यह सबसे पहले थे। इनकी पूरी जाति इस्लाम में मतांतरित हो चुकी थी। ये समुदाय ना ज्यादा धार्मिक था ना ही ज्यादा कट्टरपंथी। इस्लाम के आक्रमण के बाद यही दौर अपवाद रहा जिसने कट्टरपंथ और तलवार की नोंक पर इस्लाम को फैलाने पर जोर नहीं दिया।

इसी बीच सिंध की राजधानी थट्टा अलग दूरी पर स्थित थी। इसकी अपनी अलग पहचान और अपना अलग प्रभाव था। यहाँ का शासक मिरखशाह ना केवल अत्याचारी और दुराचारी था बल्कि कट्टर इस्लामिक आक्रमणकारी था। इसने आस पास के क्षेत्र में इस्लाम को फैलाने के लिए अनेक आक्रमण किये और नरसंहार किया। मिरखशाह जिन सलाहकारों और मित्रों से घिरा हुआ था उन्होंने उसे सलाह दी थी कि **इस्लाम फैलाओ तो तुम्हें मौत के बाद जन्नत या सर्वोच्च आनंद प्रदान किया जाएगा।**

इसके बाद मिरखशाह ने हिंदुओं के **पंच प्रतिनिधियों** को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि **इस्लाम को गले लगाओ या मरने की तैयारी करो।**

मिरखशाह की धमकी से डरे हिंदुओं ने इस पर विचार करने को कुछ समय मांगा जिस पर मिरखशाह ने उन्हें 40 दिन का समय दिया। यह सर्वविदित है कि जब मनुष्य के लिए सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं तो वह ईश्वर के बारे में सोचता है। इस मामले में भी कुछ ऐसा ही हुआ। भगवान श्रीकृष्ण के भगवद्गीता के उद्बोधन का उल्लेख करते हुए तत्कालीन ग्राम प्रमुख ने कहा कि **जब-जब पाप सीमा लांघता है और धर्म पर खतरा बता है तब तब ईश्वर अवतार लेते हैं।**

अपने सामने मौत और धर्म पर संकट को देखते हुए सिंधी हिंदुओं ने नदी (जल) के देवता वरुणदेव की ओर रुख किया। चालीस दिनों तक हिंदुओं ने तपस्या की। उन्होंने ना बाल कटवाए, ना कपड़े बदले ना भोजन किया। उपवास कर केवल ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना कर रक्षा की उम्मीद लिए बैठे रहे।

40वें दिन स्वर्ग से एक आवाज आई, **डरो मत, मैं तुहें उसकी बुरी नजर से बचाऊंगा। मैं एक नश्वर के रूप में नीचे आऊंगा, नसरपुर के रतनचंद लोहानो के घर माता देवकी के गर्भ में जन्म लूंगा।** इसके बाद से सिंधी समाज इस 40वें दिन को आज भी **धन्यवाद दिवस** के रूप में उत्सव मनाते हैं। इसके बाद हिंदुओं ने मिरखशाह से जाकर अपने ईश्वर के आने तक रुकने की प्रार्थना की। जिसके बाद मिरखशाह ने इसे अपने अहंकार के रूप देखा और **भगवान** से भी लड़ लेने की उत्सुकता में उसने हिंदुओं को कुछ दिन का और समय दिया। 3 महीने के बाद आसू माह (आषाढ़) के दूसरे तिथि में माता देवकी ने गर्भ में शिशु होने की पुष्टि की। इसके बाद पूरे हिन्दू समाज ने जल देवता का प्रार्थना कर अभिवादन किया। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन आकाश से बेमौसम मूसलाधार बारिश हुई और माता देवकी ने एक चमत्कारी शिशु को जन्म दिया।

भगवान झूलेलाल के जन्म लेते ही उनके मुख को खोला गया जिसमें सिंधु नदी के बहने का दृश्य था। पूरे हिन्दू समुदाय ने बच्चे के जन्म लेते ही गीतों और नृत्यों के साथ उसका स्वागत किया।

जनजातीय पर्व भगोरिया हाट

❖ फागुन की बयारों के साथ भगोरिया पर्व का उत्साह जनजातीय-संस्कृति व उनके उत्सव की अभिव्यक्ति है।

❖ वनवासी अँचल में यह पर्व होली के एक सप्ताह पूर्व से ही धूमधाम से मनाया जाता है इसे जनजातियों का प्रणय-पर्व भी कहा जाता है।

❖ भील तथा भिलाला जनजातियों का यह प्रमुख पर्व नई फसल की खुशी में भी मनाया जाता है।

❖ **भगोरिया हाट** में पंचायत-निपटान, मेल-मिलाप, दैनिक तथा त्यौहार की खरीददारी आदि भी होते हैं ।

❖ पश्चिमी म.प्र. के झाबुआ-आलीराजपुर से लेकर सीमावर्ती राजस्थान एवं गुजरात तथा निमाड़ाँचल तक संपूर्ण वनांचल में वर्ष-2023 में यह पर्व 01 से 07 मार्च तक आयोजित होगा।

❖ भगोररया हाट में युवक-युवतियाँ, बड़े-बुजुर्ग अपने पारंपरिक परिधानों, गहनों के श्रृंगार के साथ भ्रमण करने व अपने जरूरत के सामान खरीदने आते हैं ।

❖ हाट में जनजाति बंधु नृत्य, गायन, वादन सहित अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा उल्लास प्रकट करते हैं, इस पर्व की सांस्कृतिक विरासत महसूस करने के लिये देश-विदेश से मेहमान आते हैं ।

❖ जनजाति समाज के लोग मस्ती में घूमना व एक-दूसरों के साथ मिलना, अपने अन्य रिश्तेदारों से मेल-मिलाप करना, एक-दूसरे को गुलाल लगाकर उत्सव की अग्रिम शुभकामना देना, स्वागत करना आदि रीति-रिवाजों को निभाते हैं।

❖ भगोरिया हाट का जिसने भी दृश्य देखा होगा, उसे शहर की सिंथेटिक सुंदरता पर तरस ही आया होगा कैसे हँसते-दमकते चेहरे हैं। जेब में चार सौ रूपये नहीं, लकिन उल्लास लाखों का है।

❖ वनवासियों का यह पारंपरिक पर्व होली तक चलेगा। होली तक त्योहारिया हाट व भगोरिया हाट तथा होली के बाद उजाड़िया हाट लगने की परंपरा भी है।

❖ ऐसी भी मान्यता है कि एक राजा द्वारा निमाड़ व मालवा के कुछ क्षेत्रों में इसकी शुरुआत की गई थी।

समय के साथ बदलता भगोरिया का स्वरूप - वर्तमान परिदृश्य में भगोरिया के स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता हैं। जहाँ पारंपरिक परिधानों में पुरूषों का मुख्य परिधान धोती, साफा, झुलडी है, वहीं बढ़ती आधुनिकता के साथ युवाओं के पहनावे में परिवर्तन आया है। जींस, शर्ट, टी-शर्ट के अलावा चश्मों ने अपना स्थान बना लिया है। दूसरी ओर महिलाओं ने भी समय के साथ कदम मिलाकर सूट-सलवार, साड़ियाँ पहनना प्रारंभ कर दी हैं। प्रत्येक हाथ में मोबाइल फोन है। आवगमन के साधनों के लिये बैलगाड़ियों की जगह मोटरगाड़ियों ने ले ली है। यदि कुछ परिवर्तन नहीं हुआ है, तो वनवासियों का कोमल हृदय। वे आज भी उतने ही प्रेमी हैं, जितने उनके पूर्वज थे मनुष्य के प्रति। प्रकृति के प्रति।

वनवासियों के प्रेम में ब्रेकअप नहीं, आजीवन गठबंधन

विपुल विजय रेगे कहते हैं कि धार-झाबुआ अँचल में मांदल की पहली थाप पड़ने का अर्थ होता है, **प्रेम के गठबंधन** का आरंभ। गंगा-महादेव की घाटी में महाशिवरात्रि के दिन मांदल की पहली थाप पडती है। दूरस्थ वन क्षेत्रों से निकलकर वनवासी गंगा-महादेव आते हैं वनवासियों के प्रेम पर्व की शुरुआत यहीं से होती है और झाबुआ में जाकर **भगोरिया** में बदल जाती है। इस मेले में मन से मन के स्वर मिलते हैं, निगाहें चार होती हैं, कइयों को साथ मिल जाता है, तो कई अकेले लौटते हैं। कई पहले से चल रही प्रेम कहानियाँ भी **गंगा-महादेव** की घाटी में आकर विराम लेती है। वनवासियों का **प्रेम-गठबंधन** आजीवन होता है। **ताड़ी** की मदहोशी में वचन भुलाए नहीं जाते। शहरों की भाँति इनमें **ब्रेकअप** नाम की कोई परंपरा नहीं पाई जाती है।

पारंपरिक परिधान व श्रृंगार - जनजाति युवतियाँ तागली, कंदोरा, कड़ा, पायजेब जैसे पारंपरिक आभूषणों व सामग्री से श्रृंगार करती हैं, युवक सिर पर फेटा या साफा, धोती-कमीज पहनकर बाजारों में दिखाई देते हैं ।

लोकपर्व शीतला सप्तमी व दशामाता

अर्चना मंडलोई

भारतीय जन जीवन में धार्मिक संस्कारों के कारण अनेक लोकपर्व मनाए जाते हैं, जिनसे हमारी असीम आस्था जुड़ी होती है। प्रकृति से मिले पंचतत्व चाँद, सूरज, नदी, पर्वत, पेड़, पौधे, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु भी हम लोकपर्व मनाते हैं । एक तरह से ये पर्यावरण संरक्षण का तरीका भी है।

लोकपर्व सामाजिक रूप से नवीन चेतना प्रदान करते हैं। दैनिक जीवन की एकरसता को दूर कर अपने दायित्वों के निर्वहन की भी प्रेरणा देते हैं। चबूतरे पर जल का घड़ा उड़ेला जाता है, पूजन करने जाते समय माता से अपनी संतान की मंगल कामनाओं के लिए गीत गाए जाते हैं। पूजन की सामग्री के साथ 1 दिन पहले भीगे गेहूं व चने भी रखे जाते हैं। कूलर अर्थात कच्चा आटा और गुड़ मिलाकर रखा जाता है जो चीटियों को डाला जाता है । इन दिनों छोटे-छोटे कीड़े मकोड़े और पशु पक्षी को भोजन की कमी हो जाती है। इन सामग्री से उनका भोजन बनता है, संभवतः इसलिए भी ये सामग्री चढ़ाई जाती होगी।

शीतला माता की पूजा के बाद पाँच छोटे-छोटे पत्थर रखकर पथवारी की पूजा की जाती है। मान्यता है कि पथवारी पथ पर ये पत्थर ऊपरी बाधाओं से हमारी रक्षा करते हैं। पूजा पूर्ण होने के बाद शीतला माता के स्थान तथा स्वयं के घर पर हल्दी से मंगल रूपी छापे लगाए जाते हैं तथा लोक कथा सुनाई जाती है।

श्रीराम नवमी

श्रीराम नवमी का त्यौहार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाया जाता है। इस दिन मर्यादा-पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम जी का जन्म हुआ था। त्रेतायुग में रावण के अत्याचारों को समाप्त करने तथा धर्म की पुनः स्थापना के लिये भगवान विष्णु ने मृत्युलोक में श्रीराम के रूप में अवतार लिया था।

श्रीराम नवमी भारत में श्रद्धा और आस्था के साथ मनाई जाती है। श्रीराम नवमी के दिन ही चैत्र नवरात्रि की समाप्ति भी हो जाती है। पवित्र नदियों में स्नान करके श्रद्धालु पुण्य के भागीदार होते हैं।

भगवान श्रीराम का चरित्र जीवन में मर्यादा, करूणा, दया, सत्य और विनम्रता का क्या महत्व है, इस बारे में प्रकाश डालता है। श्रीराम नवमी का पर्व भगवान श्रीराम के आदर्शों को अपनाने पर बल देता है। इस दिन व्रत रखकर विधि पूर्वक भगवान श्रीराम की पूजा करने से भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त होता है। श्रीराम नवमी पर श्रीराम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने का विधान है। यह एक चमत्कारी स्तोत्र है। भगवान शंकर ने बुधकौशिक ऋषि को सपने में दर्शन देकर रामरक्षा स्तोत्र का पाठ सुनाया था। प्रातःकाल उठने पर उन्होंने वह लिख लिया।

श्रीराम नवमी का त्यौहार धरती पर से बुरी शक्तियों के पतन और यहाँ साधारण मनुष्यों को अत्याचारों से मुक्ति दिलवाने के लिए भगवान के स्वयं आगमन का प्रतीक माना है। कहा जाता है कि श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने जिस रामचरित मानस की रचना की थी, उसका आरंभ भी उन्होंने इसी दिन से किया था ब्रह्म ऋषि वशिष्ठ भगवान श्रीराम के गुरु थे, जिन्होंने उन्हें वैदिक ज्ञान के साथ-साथ शस्त्र अस्त्र में निपुण किया था। ब्रह्म ऋषि विश्वामित्र ने भी श्रीराम को शस्त्र विद्या दी थी। मात्र रावण का वध करना श्रीराम के पूजन का कारण नहीं है, बल्कि श्रीराम का पूरा जीवन ही एक आदर्श है। अपने जीवन चरित्र के चलते श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को कोटि-कोटि प्रणाम है।

हिन्दू कालगणना सूक्ष्मतम से विराटतम

कालगणना और इसके मात्रक :-

6 प्राण (Breath) = 1 पल (विनाडी) = 24 Seconds

60 पल (विनाडी)=1 नाडी (=घटी =घड़ी) = 24 Minutes

2 घटी = 1 मुहूर्त् = 48 Minutes

60 नाडी (घटी) = 30 मुहुर्त् = 1 अहोरात्र = 24 Hours

7 अहोरात्र = 1 सप्ताह

2 सप्ताह = 1 पक्ष

2 पक्ष = 1 माह

2 मास = 1 ऋतु

3 ऋतु = 1 अयन

2 अयन = 1 सम्वत् = 1 वर्ष

360 वर्ष = 1 दिव्य वर्ष

सतयुग = 4800 दिव्य-वर्ष = 17,28,000 वर्ष

त्रेता = 3600 दिव्य-वर्ष = 12,96,000 वर्ष

द्वापर = 2400 दिव्य-वर्ष = 8,64,000 वर्ष

कलियुग = 1200 दिव्य-वर्ष = 4,32,000 वर्ष

चतुर्युग = महायुग = दिव्ययुग = देवयुग = (सतयुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलियुग)

1 चतुर्युग = 43,20,000 वर्ष

71 चतुर्युग = 1 मन्वन्तर = 30,67,20,000 वर्ष

1 सन्धिकाल = 3 चतुर्युग = 1,29,60,000 वर्ष

14 मन्वन्तर + 2 सन्धिकाल = 1000 चतुर्युग

1000 चतुर्युग = 1 सृष्टि = 1 कल्प = 1 ब्राह्म-दिन = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष

1000 चतुर्युग = 1 प्रलय = 1 विकल्प = 1 ब्राह्म-रात्रि = 4 अरब 32 करोड़ वर्ष

2000 चतुर्युग = 1 ब्राह्म-अहोरात्र = 8 अरब 64 करोड़ वर्ष

30 ब्राह्म-अहोरात्र = 1 ब्राह्म-मास

12 ब्राह्म-मास = 1 ब्राह्म-वर्ष

100 ब्राह्म-वर्ष = 1 परा = 1 महाकल्प

मुक्ति की अवधि 1 पराकाल की होती है।

अभी 'श्वेत वराह' नामक प्रथम ब्राह्म-दिन के 7 वें 'वैवस्वत' नामक मन्वन्तर के 28वें चतुर्युग का कलियुग चल रहा है। विक्रम सम्वत् 2076 (ईसाई वर्ष 2020) में हमारे वैदिक सम्वत् निम्न है

कल्प सम्वत् = 1,97,38,13,120 वर्ष

मानव सम्वत् = 1,96,08,53,120 वर्ष

वेद सम्वत् = 1,96,08,53,115 वर्ष

कलियुग सम्वत् = 5121 वर्ष

14 मन्वंतरों के नाम - 1. स्वायंभुव 2. स्वारोचिष 3. औत्तमेय 4. तामस 5. रैवत 6. चाक्षुष 7. वैवस्वत 8. सावर्णि 9. दक्षसावर्णि 10. ब्रह्मसावर्णि 11. धर्मसावर्णि 12. रूद्रसावर्णि 13. देवसावर्णि (रौप्यसावर्णि) 14. इन्द्रसावर्णि (मौत्यसावर्णि)

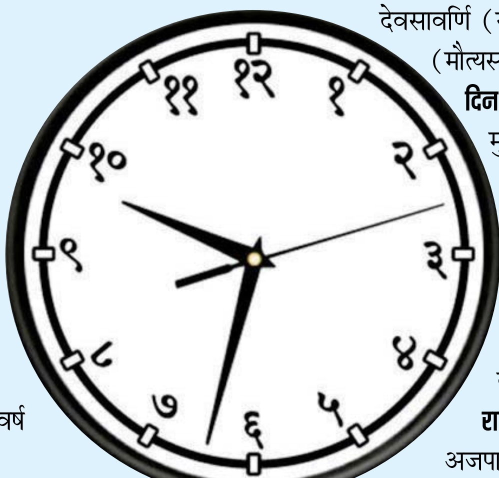

दिन के 15 मुहूर्त् - सूर्योदय से प्रथम मुहूर्त् का प्रारंभ होता है। 1. रुद्र 2. अहि 3. मित्र 4. पितृ 5. वसु 6. वाराह 7. विश्वेदेवा 8. विधि 9. सतमुखी 10. पुरुहूत 11. वाहिनी 12. नक्तनकरा 13. वरुण 14. अर्यमन् 15. भग

रात्रि के 15 मुहूर्त्- 1. गिरीश 2. अजपाद 3. अहिर्बुध्न्य 4. पुष्य 5. अश्विनी 6. यम 7. अग्नि 8. विधातृ 9. कण्ड 10. अदिति 11. जीव/अमृत 12. विष्णु 13. द्युमद्द्युति 14. ब्रह्म 15. समुद्रम्

14 लोकों (भुवनों) के नाम- 1. भूः 2. भुवः 3. स्वः 4. महः 5. जनः 6. तपः 7. सत्य 8. अतल 9. वितल 10. सुतल 11. तलातल 12. महातल 13. रसातल 14. पाताल

भूलोक के 7 भाग हैं, जिन्हें महाद्वीप (सप्तद्वीपा वसुमती) कहते हैं- 1. जम्बूद्वीप 2. प्लक्ष 3. शाल्मलि 4. कुश 5. क्रौन्च 6. शाक 7. पुष्कर

जम्बूद्वीप के भीतर 9 खण्ड हैं- 1. भारतवर्ष 2. इलावृत्तवर्ष 3. रेयकवर्ष 4. हिरण्यवर्ष 5. कुरुवर्ष 6. हरिवर्ष 7. किन्नरवर्ष 8. भद्राश्ववर्ष 9. केतुमालवर्ष

आर्यावर्त् = वर्त्मान भारत + पाकिस्तान + बांग्लादेश

भारतवर्ष = आर्यावर्त् + अफगानिस्तान (गान्धार) + म्यान्मार (ब्रह्मा) + भूटान + तिब्बत (त्रिविष्टप) + नेपाल + श्रीलंका + थाईलैंड (श्याम) + मलेशिया (मलय) + वियतनाम + इंडोनेशिया

सन्दर्भ ग्रन्थ - ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, मनुस्मृति, सूर्यसिद्धान्त आदि

छोटी कहानी

एक गांव में एक ही पाठशाला थी। गांव के सभी बच्चे पाठशाला जाते थे। एक दिन शिक्षक के निर्देश पर सभी छात्र पाठशाला के पास श्रमदान से पौधे लगा रहे थे। लेकिन एक छात्र काम नहीं कर रहा था। शिक्षक ने जब देखा, तो वे उसके पास गए और उस छात्र से कहा, 'तुम्हें भी काम में हाथ बंटाना चाहिए।' उस छात्र ने कहा, 'गुरूजी, मैं सुबह से भूखा हूं।' तब शिक्षक ने कहा, 'ठीक है बेटे, मेरे डिब्बे में रोटी- सब्जी है, तुम जाकर भोजन कर लो' छात्र ने तुरंत पेट भर खाना खा लिया और मैदान के पास बैठकर सबका काम देखता रहा। तब शिक्षक का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने कहा कि अब तो तुम्हारा पेट भर गया, चलो, काम में हाथ बंटाओ। तब छात्र धीरे-धीरे काम करने लगा। एक घंटे में उसने एक ही पौधा लगाया जबकि शेष छात्रों ने दोपहर का टिफिन खाये बिना सब काम तेजी से पूरा किया था। शिक्षक की समझ में यह बात आई तो उन्होंने उसे बुरी तरह से डांटा। तो वह कहने लगा कि पेट बहुत भरने से वो काम नहीं कर सकता। कुछ लोग इस छात्र जैसे होते हैं। वे काम टालने का बहाना खोजते हैं। ऐसे बहाना खोजने वाले लोग जिंदगी में कुछ भी हासिल नहीं कर सकते।

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उनके आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है?

उत्तर - कौआ

दैवीय रूप नारी

- गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'

जो प्रेमशक्ति की मायावी, जाया बनकर उतरी जग में।
आह्लाद बढ़ाती हुई बढ़ी, बनकर छाया छतरी मग में।।

बलिदान त्याग की महामूर्ति,ममता की सागर धैर्यव्रता।
करुणाकरिणी दैवीय दीप्ति, साहस की जननी शान्ति सुता।।

हे विनयशालिनी युगमुग्धा, भू भुवनमोहिनी प्रियंवदा।
रागानुरागिणी कनक काय,परपोषी तोषी अलंवदा।।

नारी के मन की कोमलता, कमनीय देह के आकर्षण।
मधुरिम सुर नयनों के कटाक्ष, लज्जा के मृदु हर्षण-वर्षण।।

उद्दाम - काम उन्मत्त - प्रेम, दुर्दम्य ललक का विकट जाल।
उस पर प्रजनन का दिव्य कोष, पौरुष को कर देता निढाल।।

इस तन का मादा रूप देख, दुनिया ने नारी नाम दिया।
नर ने भी जीवन शक्ति समझ, अर्द्धांग मान कर थाम लिया।।

नारी के गुण ही नारी को, दुर्बल या सबल बनाते हैं।
इनके कारण ही नर - नारी, दोनों सम्बल बन जाते हैं।।

नारी के गुण के कारण ही, नर नरपिशाच बन जाता है।
नारी के गुण के कारण ही, नर नारिदास बन जाता है।।

नारी के गुण के कारण ही, रण भीषण हुए जमाने में।
नारी के गुण के कारण ही, टल गये युद्ध अनजाने में।।

नारी नर की है प्राण शक्ति, दोनों की प्रेम पगी डोरी।
नारी नर की है शक्ति भक्ति, नारी ही नर की कमजोरी।।

दोनों दोनों के हैं पूरक, दोनों दोनों के हितकारी।
कोई भी छोटा बड़ा नहीं, नारी भारी नर भी भारी।।

मिट्टी परीक्षण क्या है?

डॉ. गोपाल राठौर

खेत की मिट्टी में पौधों की समुचित वृध्दि एवं विकास हेतु आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्ध मात्राओं का रासायनिक परीक्षणों द्वारा आंकलन करना जैसे, **मिट्टी पी.एच., मिट्टी चालकता, मिट्टी में उपलब्ध नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम, मैग्नीशियम, एंव सल्फर की मात्रा, साथ ही सूक्ष्म पोषक तत्वों (बोरान, कापर, आयरन, मैगनीज एंव मोलिब्डेनम) की उपलब्धता,** मिट्टी परीक्षण कहलाता है।

मिट्टी का नमूना एकत्र करने की विधि - मिट्टी परीक्षण के लिये सबसे महत्वपूर्ण होता है कि मिट्टी का सही नमूना एकत्र करना।

1. नमूना लेने से पूर्व खेत में ली गई फसल की बढ़वार एक ही रही हो।
2. उसमें एक समान उर्वरक उपयोग किये गये हों।
3. जमीन समतल व एक ही हो तो ऐसी स्थिति में पूरे खेत से एक ही संयुक्त या प्रतिनिधि नमूना ले सकते हैं।
4. फसल बोने या रोपाई करने के पूर्व, खाद व उर्वरकों के प्रयोग से पहले।
5. आवश्यकता हो तो खड़ी फसल में से भी कतारों के बीच से नमूना लेकर परीक्षण के लिए भेज सकते हैं।
6. वर्ष में एक बार अवश्य करवाएं या एक फसलचक्र पूर्ण होने के पश्चात् मिट्टी परिक्षण करवाएं।

नमूना सामान्यतः फसल बोने के एक माह पहले लेकर परीक्षण हेतु भेजना चाहिये ताकि समय पर परिणाम प्राप्त हो जायें एवं सिफारिश के अनुसार खाद उर्वरकों का उपयोग किया जा सके।

नमूना एकत्रीकरण हेतु आवश्यक सामग्री- गेती, खुरपी, फावड़ा, तगारी, कपड़े एवं प्लास्टिक की थैलियां, पेन, धागा, सूचना पत्रक, कार्ड आदि।

नमूना एकत्रीकरण विधि-

1. जिस खेत में नमूना लेना हो उस खेत का चयन कर लें तथा ध्यान दें कि रकबा 4 एकड़ से बड़ा न हो यदि रकबा बड़ा हो तो 2 नमूने तैयार करें।
2. जिस खेत में नमूना लेना हो उसमें जिग-जैग प्रकार से घूमकर 8-10 स्थानों पर निशान बना लें तथा मेड़ के चारों तरफ लगभग 10 फीट जगह छोड़ दें, जिससे खेत के सभी हिस्से उसमें शामिल हो सकें।
3. चुने गये स्थानों पर ऊपरी सतह से घास-फूस, कूड़ा करकट आदि हटा दें।
4. इन सभी स्थानों पर 16 सें.मी. (6 -7 इंच) तथा बगानी फसलों के लिए 30 सें.मी. (11-12इंच) या 1 मीटर गहरा वी आकार का गड्ढा खोदें। गड्ढे को साफ कर खुरपी से एक तरफ ऊपर से नीचे तक 2 से.मी. मोटी मिट्टी की तह को निकाल लें तथा साफ बाल्टी या ट्रे में डाल लें।
5. एकत्रित की गई पूरी मिट्टी को हाथ से अच्छी तरह मिला लें तथा साफ कपड़े पर डालकर गोल ढेर बना लें। अंगुली से ढेर को चार बराबर भागों की मिट्टी अलग हटा दें। अब शेष दो भागों की मिट्टी पुनः अच्छी तरह से मिला लें व गोल बनायें। यह प्रक्रिया तब तक दोहरायें जब तक लगभग आधा किलो मिट्टी शेष रह जाये।
6. सूखे मिट्टी नमूने को साफ प्लास्टिक थैली में रखें तथा इसे एक कपड़े की थैली में डाल दें। नमूने के साथ एक सूचना पत्रक जिस पर समस्त जानकारी लिखी हो एक प्लास्टिक की थैली में अन्दर तथा एक कपड़े की थैली के बाहर बांध देवें।
7. अब इन तैयार नमूनों को मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला भेजें।
8. लवण प्रभावित भूमि से मिट्टी नमूना लेने के लिये 90 से.मी. गहरा गड्ढा खोदकर एक तरफ से सपाट कर लें। फिर वहां से ऊपर से नीचे की ओर 0-15 से.मी., 15-30 से.मी., 30-60 से.मी. एवं 60-90 से.मी. की परतों से आधा-आधा किलो मिट्टी खुरच कर अलग-अलग थैलियों में रखकर व परतों की गहराई लिखकर सूचना पत्रक में स्थान का भू-जल स्तर, सिंचाई का स्त्रोत आदि जानकारी भी लिखकर मिट्टी नमूनों को प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें।
9. फलदार पौधे लगाने के लिये 1-2 मी. तक नमूना लेना चाहिये क्योंकि वृक्ष जमीन की गहराई की परतों से अपना पोषण प्राप्त करते हैं। साथ ही जमीन में कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा फलदार पौधों की बढ़वार के लिये महत्वपूर्ण होती है। 2 मी. के गड्ढे में एक तरफ सपाट करके 15, 30, 60, 90, 120, 150 एवं 180 से.मी. की गहराई पर निशान बनाकर अलग-अलग परतों से अलग-अलग मिट्टी नमूना (1/2 किलो) एकत्र करें। सूचना पत्रक में अन्य जानकारियों के साथ परतों की गहराई भी लिखें।

अमृता देवी : साधारण महिला का असाधारण कार्य

वंदना पुणतांबेकर

भारतीय जनमानस में पर्यावरण संरक्षण की चेतना और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की परम्परा सदियों पुरानी है। हमारे धर्मग्रंथ, हमारी सामाजिक कथायें और हमारी जातीय परंपरायें हमें प्रकृति से जोड़ती हैं। प्रकृति संरक्षण हमारी जीवन शैली में सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय रहा है। प्रकृति संरक्षण के लिये प्राणोत्सर्ग कर देने की घटनाओं ने समूचे विश्व में भारत के प्रकृति प्रेम का संदेश दिया है।

अमृता देवी के प्रकृति प्रेम की घटना हमारे राष्ट्रीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। सन् 1730 में राजस्थान के जोधपुर राज्य में छोटे से गांव खेजड़ली में घटित इस घटना का विश्व इतिहास में अपना अलग स्थान है। सन् 1730 में जोधपुर के राजा अभयसिंह को युद्ध से थोड़ा अवकाश मिला तो उन्होंने महल बनवाने का निश्चय किया। महल के कार्य में चूने का भट्टा जलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता बतायी गयी; राजा को दरबारियों ने सलाह दी कि पड़ोस के गांव खेजड़ली में खेजड़ी के बहुत पेड़ है, वहां से लकड़ी मंगवाने पर चूना पकाने में कोई दिक्कत नहीं होगी। इस पर राजा ने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी ।

खेजड़ली गांव में अधिकांश बिश्नोई लोग रहते थे बिश्नोई समाज के संस्थापक महान सामाजिक संत गुरू जंभोजी महाराज (1451-1536) ने पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से जीवन में सदाचार में 29 (20+9) धर्म नियम बनाये थे। इन 29 नियमों को मानने वाले सभी लोग बिश्नोई कहलाने लगे । खेजड़ली गांव में प्रकृति के प्रति समर्पित इसी बिश्नोई समाज की 42 वर्षीय महिला अमृता देवी के परिवार में उनकी तीन पुत्रियां और पति रामू खोड़ थे, जो कृषि और पशुपालन से अपना जीवन- यापन करते थे। खेजड़ली में राजा के कर्मचारी सबसे पहले अमृता देवी के आंगन में लगे खेजड़ी के पेड़ को काटने आये तो अमृता देवी ने उन्हें रोका और कहा कि यह खेजड़ी का पेड़ हमारे घर का सदस्य है, यह मेरा भाई है इसे मैंने राखी बांधी है, इसे मैं नहीं काटने दूंगी।

इस पर राजा के कर्मचारियों ने कहा कि इस पेड़ से तुम्हारा धर्म का रिश्ता है, तो इसकी रक्षा के लिये तुम लोगों की क्या तैयारी है। **इस पर अमृता देवी और गांव के लोगों ने अपना संकल्प घोषित किया सिर साटे रूख रहे तो सस्तो जाण** अर्थात् हमारा सिर देने के बदले यह पेड़ जिंदा रहता है तो हमारे लिये यह सौदा सस्ता है।

अमृता देवी के इस उत्तर से राजा के कर्मचारी पेड़ कटाई का काम स्थगित कर चले गये, लेकिन इस घटना की खबर खेजड़ली और आसपास के गांवों में जंगल की आग की तरह फैल गयी। कुछ दिन बाद राजा के कर्मचारी पूरी तैयारी से आये और अमृता के आंगन के पेड़ को काटने लगे तो गुरू जंभोजी महाराज की जय बोलते हुए सबसे पहले अमृता देवी पेड़ से लिपट गयी क्षण भर में उनकी गर्दन धड़ से अलग हो गयी, फिर उनके पति, तीन लड़कियां और 84 गांवों के कुल 363 बिश्नोईयों (69 महिलायें और 294 पुरूष) ने पेड़ की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

खेजड़ली की धरती बिश्नोईयों के बलिदानी रक्त से लाल हो गयी। यह गुरूवार 21 सितम्बर 1730 (भाद्रपद शुक्ल दशमी, विक्रम संवत 1787) का ऐतिहासिक दिन विश्व इतिहास में हमेशा याद किया जायेगा। समूचे विश्व में पेड़ों की रक्षा में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने की ऐसी दूसरी घटना का विवरण नहीं मिलता है। इस घटना से राजा के मन को गहरा आघात लगा, उन्होंने बिश्नोईयों को ताम्रपत्र से सम्मानित करते हुए जोधपुर राज्य में पेड़ कटाई को प्रतिबंधित घोषित किया और इसके लिये दण्ड का प्रावधान किया।

बिश्नोई समाज का यह बलिदानी कार्य आने वाली अनेक शताब्दियों तक पूरी दुनिया में प्रकृति प्रेमियों में नयी प्रेरणा और उत्साह का संचार करता रहेगा । बिश्नोई समाज आज भी अपने गुरू जंभोजी महाराज की 29 नियमों की सीख पर चलकर राजस्थान के रेगिस्तान में खेजड़ी के पेड़ों और वन्यजीवों की रक्षा कर रहा है । यह विडम्बना ही कही जायेगी कि हमारे सरकारी लोक चेतना प्रयासों को इस महान घटना से कहीं भी नहीं जोड़ा गया है। हमारे यहां राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के लिये इस महान दिन से उपयुक्त कोई दूसरा दिन कैसे हो सकता है ? आज सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि 21 सितम्बर के दिन को भारत का राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस घोषित किया जाये । यह पर्यावरण शहीदों के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की सच्ची श्रृद्धांजलि होगी और इससे प्रकृति संरक्षण की हमारी जातीय चेतना का विस्तार राष्ट्रीय चेतना तक होगा।

नववर्ष का प्राचीन एवं ऐतिहासिक महत्व

❖ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही परम पिता परमात्मा ने 1960853120 वर्ष पूर्व यौवनावस्था प्राप्त मानव की प्रथम पीढ़ी को इस पृथ्वी माता के गर्भ से जन्म दिया था। इस कारण यह **मानव सृष्टि संवत्** है।

❖ इसी दिन परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा चार ऋषियों को समस्त ज्ञान विज्ञान का मूल रूप में संदेश क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में दिया था। इस कारण इस वर्ष को ही वेद संवत् भी कहते हैं।

❖ आज के दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने लंका पर विजय प्राप्त कर वैदिक धर्म की ध्वजा फहराई थी।

❖ आज ही से भारतीय विक्रम संवत्, युधिष्ठिर संवत् प्रारंभ होता है।

❖ आज ही के शुभ दिन विश्व वंद्य अद्वितीय वेद द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार में वेद धर्म के माध्यम से सब के कल्याणार्थ **आर्य समाज** की स्थापना की थी। इसी भावना को ऋषि ने आर्य समाज के छठे नियम में अभिव्यक्त करते हुए लिखा **संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।**

इन सब कारणों से यह संवत् केवल भारतीय या किसी पंथ विशेष के मानने वालों का नहीं अपितु संपूर्ण विश्व मानवों के लिए है।

वर्ष प्रतिपदा /भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक महत्वः

❖ वसन्त ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगन्ध से भरी होती है।

❖ फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

❖ नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता है। अतः हमारा नव वर्ष कई कारणों को समेटे हुए है। अंग्रेजी नववर्ष न मना कर भारतीय नववर्ष हर्षोंउल्लास के साथ मनायें और दूसरों को भी मनाने के लिए प्रेरित करें।

राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान

पिछले दो हजार वर्षों में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की तुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक सम्वतों को चलाया। किन्तु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान विक्रमी संवत के साथ ही जुड़ी रही। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईस्वी संवत् का बोलबाला हो और भारतीय तिथि-मासों की कालगणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों, परन्तु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व-उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गुरु नानक, महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों की जयन्तियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईस्वी संवत् के अनुसार नहीं। नामकरण-मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या विवाह आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पञ्चांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं।

टाइफाइड का घरेलू उपचार

टाइफाइड के घरेलू इलाज - 5 तुलसी पत्ते , खुबकला 3 ग्राम , 3 अंजीर , 7 मुनक्का का काढ़ा बना के पिलायें सुबह शाम।

गिलोय का काढ़ा 1 तोला व आधा तोला शहद में मिलाकर दिन में 2-3 बार पिलाना लाभकारी है ।

नीम के बीज पीसकर 2-2 घंटे के बाद पिलाने से आन्त्रिक ज्वर उतर जाता है । यह योग मल निकालता है। शरीर में ताजा खून बनाता है, नयी शक्ति का संचार करता है । यदि मलेरिया बुखार से टायफाइड बना हो तो नीम जैसी औषधि के अतिरिक्त अन्य कोई सस्ता और सहज उपचार नहीं है ।

जीरा सफेद 3 ग्राम 100 मि. ली. उबलते जल में डाल दें । इसे 15-20 मिनट के बाद छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर रोगी को दें। 10-15 दिनों तक निरन्तर प्रातःकाल में पीने से ज्वर उतरने के पश्चात् आने वाली कमजोरी व अग्निमान्द्य नष्ट होकर भूख खुलकर लगने लगती है।

टाइफाइड के बाद सावधानी

1- पहले लक्षण दिखायी देने के 8 सप्ताह तक रोगी को दूसरे स्वस्थ एवं निरोगी व्यक्तियों से अलग रखना चाहिए।

2- रोगी के संपर्क में आने वालों को टीका लगवायें, दूध और पानी उबाल कर दें, कच्चे फल एवं शाक आदि न दें तथा रोगी द्वारा छुई हुई (पकड़ी या प्रयोग में लाई गई) प्रत्येक वस्तु का शुद्ध करना चाहिए।

3- रोगी को पूर्ण विश्राम दें। घूमने-फिरने न दें।

4- रोगी के बिस्तर एवं कमरे में स्वच्छता बनाये रखें। विशेषतः रोगी का बिस्तर 1-1 दिन बाद बदलवा दें तथा रोगी द्वारा प्रयोग में लाया गया बिस्तर को पूरे दिन की धूप दिखला दें। रोगी के कमरे में सूर्य का प्रकाश (रोशनी) एवं शुद्ध वायु आनी जरूरी है।

5- रोगी को अकेला न छोड़ें किन्तु उसके कमरे में अधिक भीड़-भाड़ भी न हो ।

6- रोगी के पेट, मल-मूत्र, पीठ, नाड़ी, तापमान तथा दिन में पिये जल की मात्रा का पूर्ण विवरण बनाये रखें।

7- रोगी का मुख खूब अच्छी तरह कुल्ले करवाकर शुद्ध रखना चाहिए।

8- मुँह आने और होंठ पकने

पर 'बोरो गिलेसरीन' लगावें। रोगी की अन्तड़ियों का वायु से बहुत अधिक फूल जाना इस रोग का बुरा लक्षण है।

9- तारपीन का तेल 5 मि.ली. सवा किलो गरम पानी में मिला कर इसमें फलालेन का कपड़ा (टुकड़ा) भिगो एवं निचोड़कर गद्दी बनाकर पेट पर बाँध दें। रोगी को आराम मिलेगा।

10- दालचीनी का तेल 2-3 बूंद पेट फूलने, पेट में दर्द तथा पेट में वायु पैदा होने के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

11- केओलिन पाउडर (चीनी मिट्टी का पिसा छना बारीक चूर्ण) या एन्टी लोजेस्टिन की गर्म-गर्म पुल्टिस पूरे पेट पर फैलाकर ढंक देने से भी पेट फूलने को आराम आ जाता है।

12- घर के दरवाजे एवं खिड़कियाँ बन्द करवाकर रोगी का शरीर खौले हुए मामूली गर्म पानी से पोंछवा दें। अधिक दिनों तक लगातार शैय्या पर रहने के कारण रोगी को जो 'शैय्या क्षत' (बिस्तर के घाव) कमर, पीठ, कूल्हों आदि में हो जाते हैं, वे न होने पायें, इसका ध्यान रखें।

टाइफाइड में क्या खाएं क्या न खाएं

1- रोगी को तरल, पुष्टिकर, लघुपाकी, आहार जैसे गाय के दूध में ग्लूकोज मिलाकर दें।

2- पेट बहुत अधिक फूल जाने पर तथा समय से सही चिकित्सा न करने पर रक्त में विषैले प्रभाव फैल जाने या अन्तड़ियों में छेद हो जाने का डर उत्पन्न हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में-कम मात्रा में भोजन खिलायें।

3- दही का मट्ठा पानी में घोलकर दूध के स्थान पर दें।

4- मीठे सेव का रस पिलायें।

5- दूध के स्थान पर दही का मट्ठा थोड़ी मात्रा में बार-बार पिलाते रहने से दस्तों में भी आराम आ जाता है।

6- तीन-चार बूंद दालचीनी का तेल' ग्लूकोज आदि में मिलाकर रोगी को 2-2 घन्टे बाद खिलाते रहने से दस्तों की बदबू, पेट की वायु और कई दूसरे कष्ट दूर हो जाते है।

7- रोगी को रोग की प्रथमावस्था में सादा सुपाच्य भोजन दें।

8- यदि पतले दस्त न हों तो दूध दें।

9- अफारा हो तो ग्लूकोज दें।

10- रोगी को किसी भी कड़ी वस्तु का पथ्य न दें।

नया सिलेबस:गीताप्रेस की लघुसिद्धांत कौमुदी पढ़ेंगे बीए थर्ड ईयर के स्टूडेंट्स

मप्र के उच्च शिक्षा विभाग ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के हिसाब से बीए थर्ड ईयर का नया सिलेबस तैयार किया है। इसमें आर्ट्स के स्टूडेंट्स को वेद भी पढ़ाया जाएगा। इसके लिए उन्हें गीताप्रेस गोरखपुर की किताब लेनी होगी। विषय का नाम है- वैदिक निर्वचन शास्त्र एवं व्याकरण। इसे स्पेसिफिक इलेक्टिव सब्जेक्ट के रूप में शामिल किया गया है।

इसे पढ़ने से छात्र वेद मंत्रों के सही अर्थ को समझने और समझाने में सक्षम होंगे। इसी के साथ वर्णोच्चारण प्रक्रिया के वैज्ञानिक आधार को भी समझा जा सकेगा। यह 100 अंकों का 6 क्रेडिट का पेपर होगा। इस विषय की पढ़ाई गीताप्रेस गोरखपुर की किताब लघुसिद्धांतकौमुदी से करवाई जाएगी। यही किताब चौखंभा संस्कृत संस्थान वाराणसी भी प्रकाशित करता है। इसके अलावा माइनर विषय वैदिक दर्शन में गीताप्रेस गोरखपुर की किताब कठोपनिषद शामिल की गई है।

फाउंडेशन कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट भी इधर, फाउंडेशन कोर्स में सभी छात्रों के लिए पर्सनालिटी डेवलपमेंट को शामिल किया गया है। इसमें बेहतर तरीके से इंटरव्यू देने, सेल्फ कॉन्फिडेंस, स्ट्रैस मैनेजमेंट, लीडरशिप, मोटिवेशन, मैनेजमेंट ऑफ सोशल मीडिया जैसे बिंदु शामिल हैं। इसे तीन टॉपिक्स में कवर किया गया है। प्रत्येक टॉपिक में पांच-पांच सब टॉपिक हैं। इसमें लीडरशिप, टाइम मैनेजमेंट एंड गोल सेटिंग और इफेक्टिव कम्युनिकेशन जैसे टॉपिक शामिल किए गए हैं।

होनहार खुशबू शर्मा ने महाविद्यालय की गोल्ड-मेडल सूची में दर्ज कराया नाम, राज्यपाल के हाथों होंगी सम्मानित

जबलपुर विश्वविद्यालय एग्रीकल्चर विषय में उच्च अंक प्राप्त कर जिले का नाम किया गौरवान्वित

देवास। कृषि महाविद्यालय बारा सिवनी (बालाघाट) जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर से बीएससी कृषि विषय में कमलाकुंज कालोनी निवासी कृभको में बीज इकाई कार्यालय में पदस्थ सुनील शर्मा की बालिका खुशबू शर्मा ने 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय की गोल्ड मेरिट लिस्ट में प्रथम स्थान प्राप्त कर जिले सहित अपने परिवार का नाम प्रदेशभर में गौरवान्वित किया।

शहर की होनहार बालिका खुशबू शर्मा का विश्वविद्यालय कुलपति एवं राज्यपाल द्वारा 16 फरवरी को गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया। वहीं विश्वविद्यालय के पं. श्रीकांत मिश्रा ने 5 हजार रूपए, जेएनकेवीवी के पेंशनर्स परिषद जबलपुर ने 15 हजार रूपए भेंटकर पुरूस्कृत किया। बालिका के पिता ने बताया कि जिले के ग्राम जामगोद जागीर से निकलकर देवास में पढ़ाई करते हुए खुशबू ने कक्षा 10वीं सीबीएसई में 91.2 प्रतिशत, 12वीं में 90.6 प्रतिशत प्राप्त कर प्रवीण्य सूची में अपना नाम दर्ज करवाया था। वह भविष्य में प्रशासनिक सेवा आईएएस / आईपीएस / आईएफएस की तैयारी कर देश सेवा करना चाहती है।

खुशबू की सफलता पर भोपाल कृभको के उप महाप्रबंधक जेपी सिंह, इंदौर, देवास के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक जीपी शर्मा, जयप्रकाश पाटीदार, राहुल पाटीदार, सेवानिवृत्त सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी डॉ. मोहम्मद अब्बास, कृषि उप संचालक आरपी कनेरिया, धीरज धुर्वे, सरपंच बाबूसिंह, ग्राम जामगोद सरपंच पप्पू डान, दिगपाल सिंह जामगोद, प्रगतिशील कृषक धर्मेन्द्र सिंह राजपूत, मुकेश नावदा, त्रियोगी नारायण शर्मा, अनिल शर्मा, बद्रीनारायण शर्मा, संदीप शर्मा, गंगाराम पाटीदार, सिया सरपंच श्री चौहान, जगन्नाथ पाटीदार, देवकरण पाटीदार, गोपाल पाटीदार, महेश पाटीदार, जिला पंचायत सदस्य महेन्द्र सिंह तालोद, गुलशर खां सहित स्नेहीजनों एवं परिवारजनों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

महाकाल की नगरी में शिप्रा तट पर टूटा अयोध्या का रिकार्ड, फैली 18 लाख 82 हजार 229 दीयों की रोशनी

बीते वर्ष दीपावली पर अयोध्या में 15 लाख 76 हजार दीये एक साथ जलाए जाने का विश्व रिकार्ड, महाशिवरात्रि पर ज्योतिर्लिंग महाकाल की नगरी अवंतिका यानी उज्जैन में टूट गया। पवित्र मोक्षदायिनी शिप्रा नदी का तट पर जब 18 लाख 82 हजार 229 दीयों की रोशनी से जगमगाया तो लोग इस भव्य, अद्भुत, अलौकिक और अविस्मरणीय कल्पनातीत सौंदर्य को पलक झपकाए बगैर निहारते ही रह गए।

गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड की टीम ने ड्रोन से दीयों की गिनती के बाद 18 लाख 82 हजार 229 दीयों के एक साथ प्रज्वलित किए जाने का विश्व रिकार्ड बनने की घोषणा की। इस दौरान संपूर्ण रामघाट, दत्त अखाड़ा घाट, सुनहरी घाट, भूखी माता घाट, केदारेश्वर घाट 'जय श्री महाकाल' के उद्घोष से गूंज उठा। इस बीच आतिशबाजी, लेजर शो भी हुआ। विश्व कीर्तिमान संबंधी प्रमाण पत्र मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को दिया गया।

झाबुआ के प्रोफेसर की अनोखी मुहिम, परिजन की स्मृति में तालाब का करवा रहे निर्माण

झाबुआ में प्रोफेसर विश्वास केशव डांगे ने एक मुहिम शुरू की है, जिसमें वे अपनी पेंशन से हर साल 5 लाख रुपए बचाकर परिजन की स्मृति में तालाब का निर्माण करवा रहे हैं

जल संरक्षण से जुड़े कई किस्से आपने सुने होंगे, लेकिन एक रिटायर्ड प्रोफेसर द्वारा किए जा रहे प्रयासों के आगे वे सब कमतर ही साबित होंगे। फिजिक्स के प्रोफेसर रहे 86 साल के विश्वास केशव डांगे की जल संरक्षण की अनूठी मुहिम लगातार चली जा रही है। शिवगंगा संगठन के सहयोग से अब तक 3 तालाबों का निर्माण करवाया जा चुका है। अब चौथे का भी भूमि पूजन कर दिया गया है।

कैसे इस काम की प्रोफेसर ने की शुरूआत - प्रोफेसर डांगे अपनी पेंशन से हर साल 5 लाख रूपए बचाकर परिजन की स्मृति में झाबुआ में तालाब का निर्माण करवा रहे है। इसमें उनका सहयोगी शिवगंगा संगठन बना है। अब तक शिवगंगा के जरिए वे 3 तालाबों का निर्माण करवा चुके हैं, जबकि चौथे तालाब के निर्माण की तैयारी की जा रही है। वर्तमान में इंदौर में रह रहे विश्वास केशव डांगे ने पहले झाबुआ में आकर शिवगंगा संगठन के द्वारा जल संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों को देखा। इसके बाद उन्होंने तय कर लिया कि वे अभियान का हिस्सा बनेंगे। इसके बाद से बीते 3 सालों में अपनी पेंशन की राशि जमा कर उसमें से 5 लाख रूपए का निर्माण करवा रहे है।

कौन है विश्वास केशव डांगे - विश्वास केशव डांगे का जन्म 16 दिसंबर 1936 को हुआ था। साल 1969 में फिजिक्स में एमएससी की साल 1959 से 1964 तक उन्होंने शासकीय डिग्री कॉलेज धार में सेवाएं दी। साल 1964 से 1988 तक वे शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंजबासोदा जिला विदिशा और शाजापुर में सहायक प्रध्यापक रहे। साल 1988 से 1992 तक डांगे ने शासकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय सीधी में सेवाएं दी। इसके बाद साल 1992 से 1996 तक शासकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय जिला सीहोर में प्राध्यापक रहे।

रामनवमी पर सेंधवा में उपद्रव करने वाले वशीम को किया गिरफ्तार

सेंधवा शहर में पिछले साल रामनवमी जुलूस के दौरान शहर में मचे उपद्रव करने के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी वशीम (27) पिता अकरम ने उपद्रव के दौरान पुलिस पर पथराव कर, देवझिरी रोड स्थित टेंट हाउस में आग लगाई थी। आरोपी को न्यायालय ने जेल भेज दिया है।

शहर थाना प्रभारी राजेश यादव ने बताया कि थाने पर रामनवमी जुलूस के दौरान शहर में उपद्रव हुआ था। इसमें आरोपी ने पुलिस पर पथराव कर शासकीय कार्य में बाधा डाली थी। इसके बाद टेंट हाउस में आग लगा दी थी। आरोपी युवक के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज था। पूर्व में अपराध में शामिल आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। आरोपी वशीम घटना दिनांक से फरार चल रहा था। एसपी दीपक कुमार शुक्ला ने आरोपी पर 5 हजार रुपए का इनाम रखा था।

उज्जैन में डॉ. कुमार विश्वास का संघ पर विवादित बयान, देशभर में कुमार विश्वास का हिंदू समाज द्वारा विरोध

डॉ. कुमार विश्वास ने उज्जैन में **विक्रमादित्य शोधपीठ संस्थान** द्वारा **उज्जैन जिला प्रशासन** के सहयोग से आयोजित **अपने -अपने राम** कार्यक्रम में संघ के स्वयंसेवकों को **अनपढ़** कहा।

डॉ. कुमार विश्वास ऐसा कई बार कर चुके है, उनपर आरोप लगते रहें कि वे अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति न होने की भड़ास **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम** की कथा के माध्यम से निकालते है।

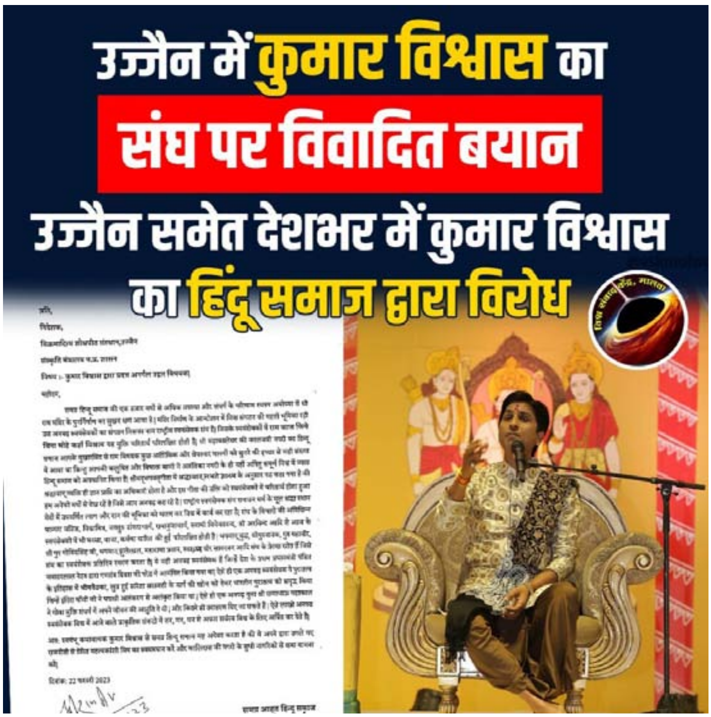

उज्जैन के समग्र आहत हिन्दू समाज ने संस्कृति मंत्रालय मध्यप्रदेश तथा विक्रमादित्य शोधपीठ को पत्र लिखकर कहा है कि जिस संगठन के कार्यकर्ताओ के जीवन, गीता की उक्ति को चरितार्थ करते है, उन्हे अनपढ़ कहना ठीक नहीं है।

समग्र हिंदू समाज ने अपने पत्र में उज्जैन के कुछ स्वयंसेवकों के नाम भी गिनाए हैं, जिनमे पद्मश्री श्रीधर विष्णु वाकणकर जी तथा गोवा मुक्ति आंदोलन के बलिदानी राजाभाऊ महाकाल सम्मिलित है।

समाज ने कहा कि देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने वालो की ऐसी परंपरा संघ में है। डॉ. कुमार विश्वास को संघ के इस अपमान पर समाज से क्षमा मांगनी चाहिए।

मालवा की शान-भगोरिया हाट

नलखेड़ा स्थित पांडव कालीन

सर्व सिद्धि मां बगलामुखी मंदिर

जो सिद्धियों के लिये प्रसिद्ध

अप्रैल माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०४ भगवान महावीर जयंती
ता. ०६ श्री हनुमान प्रकटोत्सव
ता. ०७ विश्व स्वास्थ्य दिवस
ता. १४ डॉ. अम्बेडकर जयंती, बैशाखी पर्व
ता. १६ प्रभु वल्लाभाचार्य जयंती
ता. २२ छत्रपति शिवाजी जयंती

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341